संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत की स्थायी सदस्यता का दावा

रजनी अरोड़ा,
प्रवक्ता राजनीति विज्ञान विभाग
माता हरकी देवी महिला महाविधालय औढां
सिरसा

शोध संक्षेप

द्वितीय महायुद्व के परिणामस्वरूप संयुक्त राष्ट्र संघ अस्तित्व में आया। इसका उद्देश्य विश्व में शांति व सूरक्षा स्थापित करना व युद्वों का समूल नाश करना है इन्हीं उदेदश्यों को पूरा करने में भारत ने हमेशा संयुक्त राष्ट्र संघ का सहयोग किया है व युद्वों को रोकने में एक अहम भूमिका निभाई है। इसलिए अंर्तराष्ट्रीय मंचों के माध्यम से बार बार यह आवाज उठाई जाती है कि संयुक्त राष्ट्र संघ के अंग सुरक्षा परिषद में भारत को स्थायी स्दस्यता दी जानी चाहिए। भारत को स्थायी स्दस्यता मिलने के पीधे क्या आधार है इसकी चर्चा हम विस्तारपूर्वक करेंगे।

उद्देश्य

१ मेरे शोध का उददेश्य यह जानकारी प्राप्त करना कि संयुक्त राष्ट्र संघ में सुरक्षा परिषद की स्थिती क्या है।

२ सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता क्या है।

३ भारत को सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता प्राप्त करने में किन किन कठिनाईयों का सामना करना पड रहा है।

भुमिका

द्वितीय विश्वयुद्व के परिणामस्वरूप दुनिया में शांति सद्भाव और भाईचारा स्थापित करने के लिए दुनिया के देशों ने मिलकर संयुक्त राष्ट्र संघ का गठन किया। शीतयुद्व के परिणामस्वरूप दुनिया दो भागों में विभाजित हो गई तब संयुक्त राष्ट्र संघ ने महत्वपूर्ण भुमिका निभाई। उस समय अनेक समस्याओं को चर्चा के माध्यम से हल किया गया। ऐसे अनेक अवसर आऐ जब युद्व जैसे हालात निर्मित हुए परन्तु सकारात्मक पहल से उन्हें रोका गया। शीतयुद्व की समाप्ति के बाद दुनिया ने वैश्विक अर्थव्यवस्था में प्रवेश किया। इसने पूरी दूनिया के देशों की अर्थव्यवस्था को गहराई तक प्रभावित किया। एक और विकास के कीर्तिमान स्थापित किए तो दूसरी और विध्वंसक गतिविधियों में वैश्विक स्तर पर विकास किया। इसने पुरी दुनिया के देशों को चिंता में डाल दिया है। भारत ने युद्व जैसी स्थितियों को बहुत ज्यादा सहन किया है। भारत हमेशा से विश्व शांति का पक्षधर रहा है और समस्याओं के शांतिपूर्ण हल में उसका सदैव विश्वास रहा है।

सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता

वर्तमान में बदलते अंतराष्ट्रीय परिवेश में सुरक्षा परिषद का विस्तार एक अनिवार्य आवश्यकता है। लगभग १५० देशों के प्रतिनिधियों ने सुरक्षा परिषद के पक्ष में मतदान किया। ऐसे में सुरक्षा परिषद को प्रभावी बनाना अत्यंत अनिवार्य है। ग्रुप ४ में बार बार इस बात को दोहराया गया है कि सुरक्षा परिषद का विस्तार किया जाना अत्यंत आवश्यक है। इसमें १५ स्थायी सदस्यों की जगह २५ सदस्यों की बात कही गई और यह भी कहा गया कि अधिकतर देश एशिया और अफ्रीका से लिए जाने चाहिए ग्रुप ४ के चारों देश संयुक्त राष्ट्र की स्थायी सदस्यता के लिए एक दुसरे का समर्थन करते हैं । भारत की यात्रा पर आए बराक ओबामा ने २६ जनवरी २०१६ को गणतंत्र दिवस के मौके पर भारत को सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता का जोरदार समर्थन किया है ।अमेरिका के बाद रूस ने भी कहा है कि भारत को सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता मिलनी चाहिए। रूस के विदेश मंत्री ने कहा है कि सुरक्षा परिषद के सीमित विस्तार की आवश्यकता है ओर उसे ज्यादा भारी भरकम बनाने की आवश्यकता नही है इसलिए हम केवल ब्राजील और भारत का ही समर्थन करेंगे। भारत स्थायी सदस्यता का प्रबल दावेदार है यदि भारत को १२६ सदस्यों का समर्थन मिल जाता है तो स्थायी सदस्य बन सकता है। भारत का दावा निम्न आधारों पर मजबुत दिखाई देता है।

विश्व शांति स्थापित करने में भारत सदैव ही प्रयासरत रहा है। भारत की विदेश नीति का मूलाधार विश्व शांति स्थापित करना ही रहा है। ७० वर्षों के इतिहास में भारत ने कभी किसी भी राष्ट्र पर आक्रमण नहीं किया जबकि भारत पर किसी राष्ट्र ने आक्रमण किया तो भारत ने सदैव शांति का रास्ता ही अपनाया। विश्व में कहीं भी आतंकवाद या मानवाधिकारों का शोषण हो रहा हो तो भारत ने सदैव ही विरोध किया है। सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बनने के बाद तो भारत के शांति स्थापित करने के प्रयासों में और भी तेजी आएगी। विश्व में ऐसे बहुत से संकट आए जब भारत ने संयुक्त राष्ट्र के आहवान पर अपनी शांति सेनाऐं भेजी है चाहे कोरिया संकट हो कांगो संकट हो सोमालिया या रवांडा भारत ने शांति स्थापित करने में सराहनीय भुमिका निभाई है। संयुक्त राष्ट्र के शांति स्थापना संबंधी १४ मिशनों में से ७ मिशनों में भारतीय सशस्त्र बल भाग ले रहा है। १९५०के दशक से लेकर अब तक विश्व शंति के प्रयासों में भारत अपने १२३ जवानों की जान की बाजी लगा चूका है। ऐसे में भारत की स्थायी सदस्यता का पक्ष अधिक मजबुत होता है।

भारत की तेजी से बढती अर्थव्यवस्था भी भारत की स्थायी सदस्यता का आधार है। आज भारत विश्व की चौथी बडी अर्थव्यवस्था है। कला विज्ञान कृषि में भारत ने अपना परचम लहराया है विश्व के लिए भारत एक बहुत बडा बाजार बन चूका है। अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में भारत के पास असीम संभवनाऐं है आर्थिक क्षेत्र में भारत बडी तेजी से प्रगति कर रहा है छोटी अर्थव्यवस्था वाले देशों जैसै इंग्लैंड और फ्रांस स्थायी सदस्य हैं इसलिए भारत को स्थायी सदस्यता दी जानी चाहिए ताकि विकसित देशों की मनमानी को रोका जा सके।

भरत की विशाल जनसंख्या भी स्थायी सदस्यता का दावा मजबुत करती है। विश्व में जनसंख्या के मामले में भारत चीन के बाद दूसरे नंबर पर आता है इसलिए भारत की भूमिका को अनदेखा नहीं किया जा सकता। भारत की जनता विश्व बंधूत्व की भावना में विश्वास करती है भारत के लोगों ने विश्व में अपनी पहचान बनाई है विश्व के प्रत्येक देश को भारत मे सफल इंजीनियर डाक्टर व तकनीशियन दिए है यही एकमात्र ऐसा देश है जो विश्व कल्याण की कामना करता है इसलिए भारत को सुरक्षा परिषद की स्थाायी सदस्यता के लिए नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

भारत निशस्त्रीकरण का प्रबल समर्थक रहा है। महासभा में जब निशस्त्रीकरण का प्रस्ताव रखा तो भारत ने इसका पूर्ण समर्थन किया। १९६३ की आंशिक परीक्षण संधि पर भारत ने हस्ताक्षर किए है लेकिन महाशक्तियां परमाणु परीक्षणों को नहीं रोक सकी बाद में आयरलैंड व भारत ने शस्त्र संपन्न राष्ट्रों के विस्तार को रोकने हेतू एक प्रस्ताव रखा जिसे बाद में १९६८ की संधि के रूप में रखा गया यह संधि परमाणु संपन्न राष्ट्रों के विस्तार पर कोई रोक नहीं थी बल्कि गैर परमाणु संपन्न राष्ट्रों पर प्रतिबंध था। अत भारत ने इस संधि को भेदभावपूर्ण माना व हस्ताक्षर करने से मना कर दिया यही संधि बाद में सी टी बी टी के रूप में सामने आई भारत ने इस संधि पर भी हस्ताक्षर नहीं किए क्योंकि इस संधि में भी परमाणू संपन्न राष्ट्रों के परमाणू परीक्षणों पर रोक नहीं थी अत कुल मिलाकर भारत भेदभावपूर्ण संधि का पक्षधर नहीं है बल्कि निशस्त्रीकरण का पक्षधर है। वह अस्त्रों शस्त्रों का समूल नाश चाहता है इसलिए भारत स्थाायी सदस्य बनने के पूर्ण योग्य है।

संयुक्त राष्ट्र संघ का चार्टर आतंकवाद को विश्व की गंभीर चुनौती मानता है भारत सदैव संयुक्त राष्ट्र के चार्टर में विश्वास करता आया है और सदैव से ही आतंकवाद को विश्व के लिए खतरा मानता आया है और सदैव से ही संयुक्त राष्ट्र के अधिवेशनों में आतंकवाद के विरूद्व आवाज उठाने की मांग करता आया है अमेरिका जैसी शक्तियां भी इस मुहिम में भारत का समर्थन कर रहीं है ऐसे में सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए भारत का पक्ष अधिक मजबूत होता है।

संयुक्त राष्ट्र के गठन से लेकर अब तक भारत की भागेदारी हमेशा रही है ।१९५४ में भारत की विजयलक्ष्मी पंडित महासभा की अध्यक्षा डा नगेन्द्र सिंह दो बार अंतर्राष्ट्रीय न्यायलय के न्यायधीश रह चूके है भारत सूरक्षा परिषद का अस्थायी सदस्य भी रह चूका है तथा कोरिया समस्या के लिए गठित आयोग के अध्यक्ष के वी मेनन भारत के ही थे युनेस्को व युनीसेफ में भी भारत ने अपना योगदान दिया है ऐसे में भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ में अपनी शानदार भुमिका निभाई है तथा भारत का सूरक्षा परिषद में दावा और भी मजबूत होता जा रहा है ।

रंगभेद व जातिभेद के विरूद्व भी भारत ने आवाज उठाई है दक्षिण अफ्रीका में चल रहे रंगभेद आंदोलन का भारत ने जोरदार समर्थन किया है। दक्षिण अफ्रीका की गोरी सरकार भारतीयों के साथ दुर्व्यवहार करती थी भारत ने इस समस्या के प्रति महासभा का ध्यान दिलाया व भारत व अन्य देशों के समर्थन से महासभा में यह प्रस्ताव पारित किया कि रंगभेद की नीति संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर के विरूद्व है। भारत सरकार ने गोरी सरकार के साथ अपने सभी व्यापारिक और कुटनीतिक सबंध विच्छेद कर लिए १९५२ में यह मामला दोबारा सुरक्षा परिषद में उठाया गया भारत ने १८ देशों सहित महासभा में रंगभेद नीति की जांच के लिए एक आयोग बिठाया। आयोग ने रिपोर्ट रंगभेद नीति के विरूद्व प्रस्तूत की भारत के सहयोग से संयूक्त राष्ट्रसंघ ने १९७१ में जातिवाद व रंगभेद की समाप्ति का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष घोषित किया इस प्रकार रंगभेद को समाप्त करने में भारत का अहम योगदान रहा है विश्व कल्याण को देखते हुए भारत की सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता अनिवार्य महसुस होती है।

भारत विश्व का सबसे बडा लोकतांत्रिक देश है। शांति व सुरक्षा जैसे उपायों द्वारा भारत ने विश्व में अपनी एक अलग ही पहचान बनाई है ।स्वतंत्रता समानता व मानव कल्याण जैसे कार्यों में भारत ने सदैव ही संयुकत राष्ट्र संघ का समर्थन किया है अगर भारत को सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता मिलती है तो भारत न केवल विवादों का निपटारा बल्कि विकासशील देशों में व्याप्त समस्याओं गरीबी बेरोजगारी निरक्षरता आतंकवाद जैसी समस्याओं को खत्म करने में अपना और भी योगदान दे सकता है।

निष्कर्ष

अंत में हम यही कह सकते हैं कि भारत की विदेश नीति शांति व सुरक्षा की रही है जब जब विश्व में गंभीर संकट आए हैं भारत ने बडी बुद्विमता से उन संकटों का सामना किया है। तथा हर कल्याणकारी कार्यों में संयुक्त राष्ट्र संघ का सहयोग किया है। विश्व समुदाय आज भारत के साथ खडा है औंर भारत को सुरक्षा परिषद की सदस्यता दिलाने के लिए भारत का समर्थन कर रहा है।

सुझाव

१ महाशक्तियों को चाहिए कि वो अपने निजी स्वार्थों को भूला कर विश्व कल्याण के लिए आगे आऐं और भारत को समर्थन दें।
२ महाशक्तियां वीटो का दुरूपयोग न करें सूरक्षा परिषद को शांति सुरक्षा संबंधी कार्य करने दें।
३ संयुक्त राष्ट्र संघ को महाशक्तियों का अखाडा न बनाकर उसे विश्व के लोकमत का मंच बना रहने दें।
४ विकसित राष्ट्रों को चाहिए कि वे विकाशील राष्ट्रों को सहायता दें ताकि वे विश्व की मुख्य धारा में आ सकें सबसे बडा योगदान यही होगा कि वे सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए भारत को समर्थन दें
५ अगर संयुक्त राष्ट्र को शक्तिशाली बनाना है तो सुरक्षा परिषद का विस्तार करना होगा भारत जैसे शांतिप्रिय राष्ट्र को स्थायी सदस्यता देनी चाहिए।

संदर्भ सूची

१ फडिया बी एल, अंतराष्टीय राजनीति, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा २०१०
२ कुमार रंजीत, हिन्दी न्युज इंडिया, १८ अगस्त २०१५, नई दिल्ली
३ राय गुलशन, वर्मा सोमनाथ, कुमार सुरेश, अंतराष्टीय संगठन, ज्योति बुक डिपो, २०१७